जीवन में
हमेशा एकदूसरे
को समझने का प्रयत्न
करिए, परखने का नहीं।
– अज्ञात

नफरत भरे अभियानों के दुष्प्रभाव

अगर बच्चों के मन में कोई सवाल है तो वे उसका जवाब जरूर दें और उन्हें विस्तार से उस संबंध में जानकारी दें। संभव है बच्चे सोशल मीडिया पर प्रचारित किसी गलत तथ्य को सही मान बैठे हों। अभिभावकों को उन्हें सचाई से अवगत कराना चाहिए।

मनोज त्यागी।

दिल्ली और एनसीआर के कई स्कूलों ने भारत–पाक तनाव के मद्देनजर सोशल मीडिया पर चल रहे नफरत भरे अभियानों के दुष्प्रभावों से बच्चों को बचाने के लिए खास पहल की है। उन्होंने पैरंट्स से कहा है कि वे बच्चों से इस बारे में बात करें। अगर बच्चों के मन में कोई सवाल है तो वे उसका जवाब जरूर दें और उन्हें विस्तार से उस संबंध में जानकारी दें। संभव है बच्चे सोशल मीडिया पर प्रचारित किसी गलत तथ्य को सही मान बैठे हों। अभिभावकों को उन्हें सचाई से अवगत कराना चाहिए। मुमकिन है किसी दुष्प्रचार से किसी बच्चे के भीतर डर बैठ गया हो, हताशा पैदा हो गई हो या किसी समुदाय के प्रति नफरत का भाव भर गया हो। ऐसे में अभिभावक को चाहिए कि वह बच्चे में विवेकपूर्ण दृष्टि पैदा करें। कई स्कूलों में तो शिक्षक भी यह काम कर रहे हैं। कुछ स्कूलों ने तो बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रहने को कहा है।

हालांकि यह संभव नहीं है। आज के बच्चे इसी के साथ बड़े हुए हैं। वह इसी के शिल्प में संवाद करते हैं। लेकिन वे इसके खेल को नहीं समझ पाते। उनका कोमल मन झूठ और सच में आसानी से अंतर नहीं कर पाता और वह सोशल मीडिया की किसी कपोलकल्पना को अपनी धारणा बना लेता है। पुलवामा में आतंकी हमला होने के बाद सोशल मीडिया के अलग–अलग प्लैटफॉर्म पर नफरत भरी टिप्पणियां और तस्वीरें आने लगीं। भारत के एयर स्ट्राइक के बाद तो इसकी बाढ़ सी आ गई। न सिर्फ पाकिस्तान बल्कि अपने ही देश के कुछ समुदायों के प्रति जहर उगलने का सिलसिला शुरू हो गया जो अब भी नहीं थमा है।

इस क्रम में न सिर्फ मर्यादा की सीमाएं लांघी गईं बल्कि ऐतिहासिक तथ्यों की भी धज्जियां उड़ाई गई हैं। सरकार के बयानों को भी तोड़–मरोड़ कर पेश किया गया। कई गड़े मुर्दे उखाड़े गए। राजनेताओं का मजाक उड़ाया गया। उनकी अभद्र तस्वीरें डाली गईं। अगर किसी ने युद्ध के विरोध में कुछ कहा या भारत–पाक दोस्ती की बात की तो उसके खिलाफ गालियों की बौछार शुरू हो गई। ऐसा लगता है कि अनपढ़ और कुंठितों की एक फौज सोशल मीडिया पर कुंडली मारकर बैठ गई है। लेकिन ऐसे लोगों के अलावा सोशल मीडिया पर एक तबका ऐसा भी है जो अपने निहित स्वार्थ के लिए जहर के बीज बो रहा है। दुर्भाग्य से पढ़े–लिखे समझदार लोग भी उनकी बातों में आ जाते हैं। लेकिन नई पीढ़ी को उनसे बचाना होगा।

आज ऐसे नागरिक तैयार करने की जरूरत है जो विवेकवान हों, जिनके पास वैज्ञानिक नजरिया हो और जो तर्क की कसौटी पर हर तथ्य को परखते हों। सोशल मीडिया पर नियंत्रण की कोशिशें कई स्तरों पर चल रही हैं। पर सबसे ज्यादा जरूरी है जागरूकता फैलाने की। इस दृष्टि से दिल्ली और एनसीआर के कुछ स्कूलों की पहल महत्वपूर्ण है। देश के अन्य स्कूलों को इस दिशा में सोचना चाहिए।

भागता कौन ?

धर्म-दर्शन

डॉ. अर्चिका दीदी।

काशमीर से पिट कर भागा कौन? हम हैं हिंदु । पाकिस्तान से पिट कर भागा कौन ? हम हैं हिंदु। बंगलादेश से पिट कर भागा कौन ? हम हैं हिंदु।

अफगानिस्तान से पिट कर भागा कौन ? हम हैं हिंदु । पिटता, सिसकता, भागता कौन ? हम हैं हिंदु। मल्लापुरम से भागा कौन ? हम हैं हिंदु। कैराना से भागा कौन? हम हैं हिंदु। मालदा से भागा कौन ? हम हैं हिंदु। सिवान से भागा कौन ? हम हैं हिंदु। पिटता, सिसकता, भागता कौन ? हम हैं हिंदु। आतंकवाद ने मारा कौन ? हम हैं हिंदु। नक्सलवादियॉ ने मारा कौन? हम हैं हिंदु। जिहादियॉ ने मारा कौन ? हम हैं हिंदु। खालिस्तानियॉ ने मारा कौन ? हम हैं हिंदु। पिटता, सिसकता, भागता कौन ? हम हैं हिंदु ।

संपादकीय

अर्थ और क्या लगाया जाए

कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में अपना अभियान शुरू कर दिया है। यूपी में अपनी खोई हुई जमीन फिर से तलाश करने और सारी सीटें अकेले दम पर लड़ने की बात कही गई।

यह घटनाक्रम उसका दूरगामी नजरिया जताने के लिए पर्याप्त नहीं है, लेकिन कांग्रेस के प्रति नरम होकर सोचें तो यह नतीजा निकाला जा सकता है कि वह आगे की राजनीति को ध्यान में रखकर चल रही है। प्रियंका गांधी को महासचिव बनाने से यूपी के कांग्रेस कार्यकर्ताओं का उत्साह निश्चित रूप से बढ़ा है, हालांकि उनको और ज्योतिरादित्य सिंधिया को जमीन पर उतरने के बाद ही पता चलेगा कि उनकी चुनौतियां कितनी बड़ी हैं। सच कहें तो यूपी में कांग्रेस को लगभग शून्य से शुरू से करना है, क्योंकि नीचे पंचायत और वार्ड स्तर पर उसका सांगठनिक ढांचा उजड़ गया है। 2017 के विधानसभा चुनाव में उसने राज्य के सत्तारूढ़ दल से गठबंधन बनाकर चुनाव लड़ा था, फिर भी कुल 403 में से सिर्फ सात सीटें उसके हाथ आईं। इसका अर्थ और क्या लगाया जाए?

1984 के आम चुनाव में कांग्रेस ने यूपी में 51 फीसदी वोटों के साथ कुल 85 में से 83 लोकसभा सीटें जीती थीं, लेकिन उसके बाद से वह लगातार लुढ़कती ही गई है। इसका अकेला अपवाद 2009 का आम चुनाव था, जिसमें 21 सीटें हासिल करके वह राज्य में दूसरे नंबर पर रही। शीर्ष नेतृत्व का तात्कालिक जरूरतों के तहत राज्य के दोनों क्षेत्रीय दलों के आगे घुटने टेक देना भी कांग्रेस को बुढ़ापे की ओर ले गया, लेकिन उसकी अधोगति का सबसे बड़ा कारण यह रहा कि यूपी में कोई मजबूत जमीनी नेतृत्व खड़ा करना पार्टी आलाकमान के अजेंडे पर ही नहीं रहा।

नतीजा यह कि पार्टी में राजनीतिक संस्कृति समाप्त हो गई और चाटुकारिता–गुटबाजी का बोलबाला हो गया।

इस सर्वे पर अनेक उद्योगपतियों, कारोबारी संगठनों और अर्थ विशेषज्ञों ने अपने–अपन तरीके से प्रतिक्रिया जताई है। हालांकि इस पर आम सहमति है कि छोटे शहरों का उभरना विकास प्रक्रिया के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

विकास कर रहे शहर

आशा नेगी।

भारत के तीन शहर दुनिया में सबसे तेजी से विकास कर रहे शहरों की टॉप–10 लिस्ट में शामिल हैं। इसमें चौंकाने वाली बात यह है कि ये शहर दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगर नहीं बल्कि केरल के बेहद छोटे शहर हैं, जो चर्चा में भी बहुत कम आते हैं। ये छोटे शहर हैं मलप्पुरम, कोझिकोड और कोल्लम। ब्रिटिश मल्टिनैशनल मीडिया कंपनी 'द इकोनॉमिस्ट ग्रुप' से जुड़े 'इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट' (ईआईयू) के सर्वे के अनुसार तेजी से विकास करने वाले शहरों में मलप्पुरम दुनिया में पहले नंबर पर है। यहां 2015 से 2020 के बीच 44.1 फीसदी बदलाव आया। कोझिकोड 34.5 प्रतिशत बदलाव के साथ चौथे और कोल्लम 31.1 पर्सेंट बदलाव के साथ 10वें स्थान पर रहे।

वहीं, केरल का ही त्रिशूर शहर 13वें नंबर पर है। गुजरात का सूरत 26वें और तमिलनाडु का तिरुपुर 30वें स्थान पर है। शीर्ष 10 में स्थान हासिल करने वाले अन्य शहरों में चीन के तीन और नाइजीरिया, ओमान, यूएई, वियतनाम के एक–एक शहर शामिल हैं। इस सर्वे पर अनेक उद्योगपतियों, कारोबारी संगठनों और अर्थ विशेषज्ञों ने अपने–अपन तरीके से प्रतिक्रिया जताई है।

हालांकि इस पर आम सहमति है कि छोटे शहरों का उभरना विकास प्रक्रिया के लिए एक सकारात्मक संकेत है। यह इस बात का सूचक है कि विकास प्रक्रिया का विकेंद्रीकरण हो रहा है। वहां भी इंफ्रास्ट्रक्चर का जाल फैला है, व्यवसाय और रोजगार के नए–नए अवसर पैदा हो रहे हैं। सच कहा जाए तो आज देश के अनेक छोटे शहरों में आधुनिक जीवन के तमाम लक्षण मौजूद हैं जैसे नए तरह के रोजगार, कारोबार के अवसर, बेहतर प्रशासन, कम भीड़भाड़, अच्छी लाइफ स्टाइल और कम महंगाई। दरअसल उदारीकरण और सूचना क्रांति ने छोटे शहरों पर गहरा असर डाला। वहां भी बदलाव की प्रक्रिया से जुड़ने की चाहत बढ़ी। जब सूचना क्रांति के जरिए वहां का समाज पूरे देश और दुनिया से जुड़ा तो उसका नजरिया बदला, रहन–सहन और उपभोग की आदतें बदलीं। वहां के नौजवानों ने शिक्षा और रोजगार के प्रति अपना परंपरागत रवैया छोड़ा। उन तबकों ने भी व्यवसाय से जुड़ना शुरू किया जो अब तक उसे हेय मानते थे। युवाओं ने नए मार्केट के हिसाब से व्यावसायिक शिक्षा और कौशल पर जोर दिया।

इस तरह उन शहरों में नए बाजार और तकनीक के अनुरूप माहौल तैयार हुआ। इसलिए तमाम बड़ी–बड़ी कंपनियों और खासकर आईटी कंपनियों ने उन शहरों का रुख किया। इसके अलावा शहरी विकास की सरकारी योजनाओं का भी लाभ छोटे शहरों को मिला है। इसलिए अब कई शहरों से युवाओं का महानगरों की ओर पलायन कम हुआ है। देश का समग्र विकास छोटे शहरों के जरिए ही संभव है। हालांकि अब भी देश के ज्यादातर छोटे शहर बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। वहां इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है, शिक्षा और स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएं नहीं हैं। इन सब की व्यवस्था करने के अलावा उन शहरों की अन्य छोटे और बड़े शहरों से कनेक्टिविटी बढ़ानी होगी।

सूडोकु नवताल- 5221

✱☆☆☆☆ सरल

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5220 का हल

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1

अपना ब्लॉग
हरियाली बढ़ने का खतरा

चंद्रभूषण। वैज्ञानिक रिसर्च के दायरे में गूगल का जिक्र सोर्स की तरह करते ही विशेषज्ञ नाराज होने लगते हैं लेकिन गूगल अर्थ की मदद से हिमालय–हिंदूकुश पर्वतमाला पर पर्यावरण और जल विज्ञान (हाइड्रॉलजी) को लेकर अभी एक बहुत महत्वपूर्ण शोध सामने आया है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते ध्रुवीय इलाकों में फैल रही हरियाली को पर्यावरण ध्वंस की दृष्टि से 'निगेटिव फीड' माना जाता है। यानी हाल तक यहां जमी रहने वाली बर्फ से जो धूप परावर्तित हो जाती थी, वह अब हरियाली द्वारा सोख ली जा रही है। नतीजा? और ज्यादा गर्मी, और बर्फ पिघलना, और हरियाली।

'ग्लोबल चेंज बायॉलजी' में प्रकाशित रिसर्च बता रही है कि कुछ ऐसा ही धरती का तीसरा ध्रुव कहलाने वाली हिमालय–हिंदूकुश पर्वतमाला में भी घटित हो रहा है, हालांकि इसके अंजाम को लेकर अंतिम नतीजे पर पहुंचना अभी बाकी है। हिमालय के समानांतर उड़ते हुए जहाज की खिड़की से हमें 'ट्री लाइन' और 'स्नो लाइन' बिल्कुल साफ दिखाई देती है। यानी वह रेखा जिसके ऊपर पेड़ नहीं दिखते, और वह, जिसके ऊपर बर्फ ही बर्फ दिखती है।